साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 05
May 2017

ऐसे ही होते है हमारे नेता

तृप्ति कुमारी

थोरी सी खटपट
दोस्ती झटपट
अपने बातों में
फंसायें फटाफट
दिलाये दर्शकों को
मजा फटाफट
लोग हो जाये हंसके लोटपोट
ख़त्म कर दे मन का खोट
लगाकत शब्दों का मरहम
बन ले दुश्मनों को हमदम
और मांगने लगते है वोट
ऐसे ही होते है हमारे नेता
अभिनेता से बढ़के अभिनेता
मांगकर हमसे वोट
हाथ जोड़
वो तो जाते है लौट
हमें परेशां छोड़
वो पांच साल जाते है लेट
यदि जाओ कभी
मांगने सहायता
कहेंगे कीजिये वेट
आयेंगे पहने सूत बूट
कहेंगे नेता है थोरे ही कर रहे लूट
माफ़ कीजियेगा हो रहा है लेट
फिर कभी होगी अपनी भेंट

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 05
May 2017

शायद पांच साल बाद
आएगी उनके हमारी याद